टिप्पणी

4

आह्वान

संसार में जो भी उपलब्धियाँ हैं, उन सबके पीछे एक ही चीज़ दिखाई देती है, वह है— पुरुषार्थ, परिश्रम, मेहनत। आज कृषि, चिकित्सा–विज्ञान आदि के क्षेत्र में जो प्रगति हुई है, वह पुरुषार्थ के बिना भला कैसे संभव हो सकती थी। क्या आलसी व्यक्ति यह सब कर सकते थे? आप दसवीं कक्षा पास करना चाहते हैं। क्या आपके आलस्य से काम बन पाएगा? मात्र भाग्य के भरोसे बैठे रहना, परिश्रम न करना, न तो बुद्धिमत्ता है और न ही सफलता पाने का ज़रिया। भाग्यवाद तो व्यक्ति को आलसी बना देता है। यह प्रगति का शत्रु होता है। तुलसीदास जी ने यही कहा है— 'सकल पदारथ एहि जग माहीं। करमहीन नर पावत नाहीं।' तो आलस्य छोड़ो, कर्महीनता त्यागो। इसी तरह कठोपनिषद् में भी कहा गया है—

— उत्तिष्ठत, जाग्रत, प्राप्य वरान्निबोधात।

अर्थात् उठो, जागो और श्रेष्ठतम को प्राप्त कर उन्हें जानो।

प्रस्तुत कविता का स्वर भी ऐसा ही है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप–

- कर्म और परिश्रम के संबंध की व्याख्या कर सकेंगे;
- जीवन में उन्नति और प्रगति के लिए पुरुषार्थ के महत्त्व को स्पष्ट कर सकेंगे;
- राष्ट्र के विकास के लिए एकता और भाईचारे के महत्त्व का उल्लेख कर सकेंगे;
- 'भाग्यवाद मनुष्य को अकर्मण्य बना देता है'— कथन की व्याख्या कर सकेंगे;
- रूपक तथा दृष्टांत अलंकारों को पहचान कर उनका प्रयोग कर सकेंगे;
- कविता की पंक्तियों का अपने शब्दों में अवसरानुकूल प्रयोग कर सकेंगे;
- कविता के भाव-सौंदर्य की सराहना कर सकेंगे;
- कविता की भाषा पर टिप्पणी कर सकेंगे।

4.1 मूल पाठ

आइए, पहले निम्नलिखित पंक्तियों को ध्यानपूर्वक पढ़ लेते हैं। हाशिए पर कठिन शब्दों के अर्थ दिए जा रहे हैं–

बैठे हुए हो व्यर्थ क्यों? आगे बढ़ो, ऊँचे चढ़ो!
है भाग्य की क्या भावना, अब पाठ पौरुष का पढ़ो!
है सामने का ग्रास भी मुख में स्वयं जाता नहीं,
हा! ध्यान उद्यम का तुम्हें तो भी कभी आता नहीं।।

जो लोग पीछे थे तुम्हारे, बढ़ गए, हैं बढ़ रहे,
पीछे पड़े तुम, दैव के सिर दोष अपना मढ़ रहे!
पर कर्म–तैल बिना कभी विधि–दीप जल सकता नहीं,
है दैव क्या? साँचे बिना कुछ आप ढल सकता नहीं।।

आओ, मिलें सब देश–बांधव हार बनकर देश के,
साधक बनें सब प्रेम से सुख–शांतिमय उद्देश्य के।
क्या सांप्रदायिक भेद से है ऐक्य मिट सकता अहो!
बनती नहीं क्या एक माला विविधा सुमनों की कहो?

–मैथिलीशरण गुप्त

शब्दार्थ

व्यर्थ	– बेकार, निरर्थक
आगे बढ़ना	– पहल करना/विकास करना
ऊँचे चढ़ना	– अपनी क्षमता बढ़ाना/ तरक्की करना/ प्रगति करना,
भावना	– इच्छा, कामना
पुरुषार्थ	– कर्म, पौरुष
पाठ पढ़ना	– आचरण करना/सीखे हुए पर अमल करना
ग्रास	– निवाला, कौर, टुकड़ा
उद्यम	– परिश्रम, मेहनत, प्रयास
पीछे पड़े	– पिछड़ गए
कर्म-तैल	– कर्मरूपी तेल
विधि-दीप	– भाग्यरूपी दीपक
दैव	– विधाता, भाग्य
साँचा	– मूर्तियाँ बनाने का खाँचा या फर्मा
दोष मढ़ना	– जिम्मेदार ठहराना
देश-बांधव	– देश के नागरिक भाई-बहन
साधक	– साधना या परिश्रम करने वाले
ऐक्य	– एकता
विविध	– अनेक प्रकार के

बैठे हुए हो व्यर्थ क्यों? आगे बढ़ो, ऊँचे चढ़ो!
है भाग्य की क्या भावना, अब पाठ पौरुष का पढ़ो!
है सामने का ग्रास भी मुख में स्वयं जाता नहीं,
हा! ध्यान उद्यम का तुम्हें तो भी कभी आता नहीं।।

4.2 आइए समझें

4.2.1 अंश-1

ध्यान दें कि यह कविता सन् 1912 के आस–पास, तब लिखी गई थी जब हमारा देश गुलाम था। आपने आधुनिक भारत के इतिहास में पढ़ा होगा कि किस तरह सन् 1857 के स्वाधीनता–संघर्ष में अंग्रेज़ों ने भारत के लोगों का क्रूरतापूर्वक दमन किया। अंग्रेज़ों ने अपने यहाँ की मिलों में बनी विदेशी वस्तुओं से भारतीय बाज़ारों को भरकर देशी कारीगरों को बेरोज़गार बना दिया गया। यह दमन निरंतर जारी रहा। कवि का परिचय सहमी और डरी हुई जनता से हुआ। कवि को आशंका थी कि ऐसी स्थिति में देश की जनता निराश होकर भाग्यवादी न बन जाए अर्थात् भाग्य के भरोसे न बैठ जाए। अतः इस कविता के माध्यम से वह देश की जनता को जगाकर कर्म और संघर्ष की प्रेरणा देता है।

हे भारतवासियों! निरर्थक अर्थात् बेकार क्यों बैठे हो? अगर अपने दुखों से मुक्ति पाना चाहते हो तो उठो और सफलता की चोटी छूने के लिए चल पड़ो। सफलता पाने अर्थात् जीवन में कुछ सार्थक या अच्छा काम करने के लिए चलना ही पड़ता है, परिश्रम करना

ही पड़ता है। अब भाग्य के बदलने या परिस्थितियाँ सुधारने की प्रतीक्षा में बैठे रहना छोड़ो। केवल कर्म या पुरुषार्थ के मार्ग पर चलो क्योंकि परिस्थितियाँ अपने आप नहीं बदलतीं, उन्हें मनुष्य अपने उद्यम से बदलता है। भारतीयों के मन में फैली हुई निराशा और आलसीपन को देखकर कवि को दुख होता है। देशवासियों का उद्बोधन करते हुए कवि एक उदाहरण देते हुए कहता है– तुम जानते हो कि सामने रखा निवाला भी अपने–आप मुँह में नहीं जाता, उसके लिए प्रयास करना पड़ता है यानी हाथ बढ़ाकर उसे उठाना होता है। कवि खेद प्रकट करते हुए कहता है कि यह सब जानते हुए भी हम दुख से मुक्त होने के लिए उद्यम नहीं करते। यह आवश्यक है कि हम समस्त देशवासी निराशा के अंधकार से बाहर निकलें, सुस्ती की जकड़न को तोड़ फेंके और देश की दशा सुधारने के लिए हर संभव प्रयत्न में जुट जाएँ।

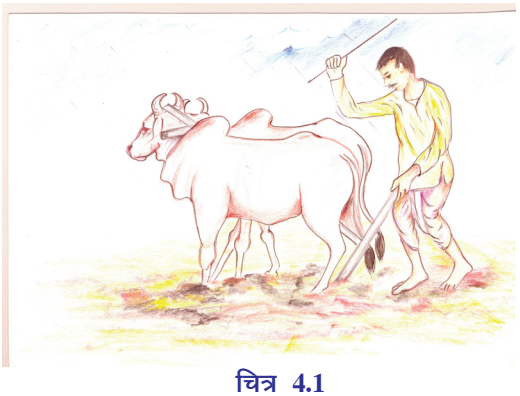

चित्र 4.1

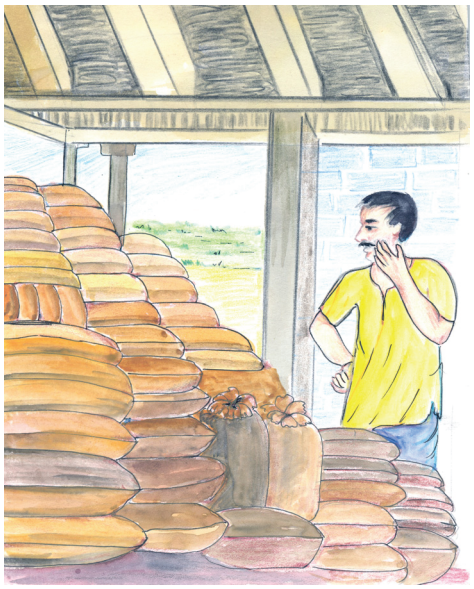

चित्र 4.2

इसी भाव से संबंधित संस्कृत की एक कहावत है–'उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः' अर्थात् उद्यम या प्रयास करने से ही किसी कार्य में सफलता मिलती है, केवल इच्छा रखने या सपने देखने से नहीं।

रामधारी सिंह दिनकर की एक कविता की इस पंक्ति को भी देखिए– 'खम ठोक ठेलता है जब नर, पर्वत के जाते पाँव उखड़!' अर्थात् मनुष्य जब दृढ़तापूर्वक आगे बढ़ता है तो पहाड़ के पाँव भी उखड़ जाते हैं यानी हिम्मत के बल पर पहाड़ पर भी विजय प्राप्त की जा सकती है। हम जिस विकास के चरण पर आज पहुँचे हैं, उसके लिए हमारे पूर्वजों ने पहाड़ को काटकर रास्ते बनाने जैसा असंभव कार्य कर दिखाया है। इस बात से यही सिद्ध होता है कि कठिनाइयों पर विजय पाने का बस एक ही उपाय है, और वह है– आलस्य छोड़कर प्रयास और परिश्रम में जुट जाना। आलस्य तो शरीर के भीतर छिपा हुआ शत्रु है– 'आलस्यं हि मनुष्याणाम् शरीरस्थो महान् रिपुः।'

इस कविता को पढ़ते हुए इसकी भाषा पर आपका ध्यान जरूर गया होगा। इस अंश में दो प्रयोग अपने सामान्य अर्थ से कुछ भिन्न अर्थ दे रहे हैं। वे हैं– आगे बढ़ना और ऊँचे चढ़ना। इनके प्रयोग से अभिव्यक्ति में विशेष अर्थ–सौंदर्य आ गया है।

टिप्पणी

आगे बढ़ो और ऊँचे चढ़ो का प्रयोग हमेशा इस अर्थ में नहीं होता। जैसे किसी व्यक्ति से आप जल्दी चलने, पहल करने या आगे चलने के लिए कहें तो कह सकते हैं– आगे बढ़ो। आप किसी लाइन में खड़े प्रतीक्षा कर रहे हैं। आगे के लोग धीरे–धीरे आगे बढ़ रहे हैं, आपसे आगे वाला वहीं खड़ा है तो आप उससे कह सकते हैं– 'आगे बढ़िए', या 'आगे बढ़ो'। इसी प्रकार 'ऊँचे चढ़ो' का प्रयोग भी ऊपर चढ़ने के सामान्य अर्थ में हो सकता है। कविता में 'आगे बढ़ो और 'ऊँचे चढ़ो' का प्रयोग पहल करने, विकास करने या प्रगति करने के अर्थ में हुआ है।

कविता में कभी–कभी किसी अर्थ को पाठक या श्रोता तक पहुँचाने के लिए कुछ दृष्टांतों अथवा उदाहरणों का उपयोग किया जाता है। जैसे इस पंक्ति में यह बात कही गई कि कोई भी वस्तु बिना प्रयास के प्राप्त नहीं होती। फिर एक दृष्टांत दिया गया कि खाने के लिए निवाले को मुँह में रखने के लिए भी प्रयास करना पड़ता है। यहाँ दृष्टांत अलंकार है।

इस काव्यांश में 'हा' खेद अथवा दुख प्रकट करने के लिए आया है। यह विस्मयादिबोधक शब्द है। हर्ष, शोक, खेद, कष्ट आदि को प्रकट करने के लिए हिंदी में अनेक विस्मयादिबोधक शब्द हैं, जैसे वाह!, आह!, अहा! शाबाश! आदि।

जब यह कविता लिखी गई थी तो देश में स्वाधीनता आंदोलन ज़ोरों पर था और देशभक्त इन पंक्तियों को गाते हुए सत्याग्रह के जुलूसों एवं प्रभातफेरियों में भाग लेते थे। जानते हैं क्यों? क्योंकि इन पंक्तियों में एक ऐसा ओज और प्रवाह है, जो निराशा में डूबे हुए व्यक्ति के मन में भी जोश और उत्साह भर देता है। ऐसी भाषा को 'ओजपूर्ण' भाषा कहा जाता है।

पाठगत प्रश्न-4.1

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. कवि ने किन्हें पौरुष का पाठ पढ़ने के लिए कहा है?

   (क) आलसी लोगों को ☐ (ख) भाग्य का विरोध करने वालों को ☐

   (ग) आगे बढ़ने वालों को ☐ (घ) ऊँचे चढ़ रहे लोगों को। ☐

2. जो भाग्य के भरोसे रहता है उसे क्या कहते हैं?

   (क) भाग्यहीन ☐ (ख) भाग्यवादी ☐

   (ग) भाग्यवान ☐ (घ) भाग्यशाली ☐

3. कर्म के बारे में क्या सच नहीं है?

   (क) स्वस्थ, चुस्त और सतर्क बनाता है। ☐

   (ख) आराम करने का अवसर प्रदान करता है। ☐

   (ग) कठिनाइयों से मुक्ति दिलाता है। ☐

   (घ) एक सफल मनुष्य बनाता है। ☐

टिप्पणी

क्रियाकलाप-4.1

कविता के इस अंश को समझते हुए आपने विस्मयादिबोधक शब्दों के बारे में पढ़ा। यह भी जाना कि हर्ष, शोक, खेद, कष्ट आदि को प्रकट करने के लिए विस्मयादिबोधक शब्दों का प्रयोग किया जाता है। नीचे कुछ विस्मयादिबोधक शब्द और जिन स्थितियों में उनका प्रयोग किया जाता है, वे स्थितियाँ दी जा रही हैं, उन्हें ध्यान से पढ़िए :

शब्द		स्थिति
अरे	—	विस्मय
अरे–अरे	—	सावधान करना
हाय	—	कष्ट या पीड़ा
अहा	—	हर्ष
आह	—	दुख, पीड़ा
ओह	—	विस्मय, कष्ट, खेद
उफ़	—	कष्ट, खेद
वाह	—	आश्चर्य, सराहना, उत्साहवर्धन
शाबाश	—	सराहना, उत्साहवर्धन
हुँह	—	तिरस्कार, उपेक्षा

अब आप उपर्युक्त विस्मयादिबोधक शब्दों का प्रयोग करते हुए ऐसे वाक्य लिखिए जिनमें ये शब्द उचित रूप में आए हों–

1. .....

2. .....

4.2.2 अंश-2

जो लोग पीछे थे तुम्हारे, बढ़ गए, हैं बढ़ रहे,
पीछे पड़े तुम, दैव के सिर दोष अपना मढ़ रहे!
पर कर्म-तैल बिना कभी विधि-दीप जल सकता नहीं,
है दैव क्या? साँचे बिना कुछ आप ढल सकता नहीं।।

आइए, अब दूसरे अंश को समझने के लिए उसे एक बार फिर पढ़ लेते हैं।

इस काव्यांश को पढ़ते हुए आप जान गए होंगे कि कवि ने इसमें भी भारतवासियों को कर्म का पाठ पढ़ाने का प्रयास किया है, पर कुछ अलग ही तरह से, नए उदाहरणों के द्वारा।

इस अंश की पहली पंक्ति में कवि एक सूचना देते हुए कहता है कि जो लोग पीछे थे, वे आगे बढ़ गए हैं और बढ़ते जा रहे हैं। आप समझ रहे हैं कि यहाँ किन लोगों के बारे में कहा जा रहा है?

टिप्पणी

इतिहास पढ़ते हुए आपने शायद जाना होगा कि सभ्यता के विकास के दौर में भारत बहुत समृद्ध देश था। इसकी समृद्धि विश्व में विख्यात थी और इसे 'सोने की चिड़िया' कहा जाता था। इसकी तुलना में विश्व के अन्य देश क़ाफी पीछे थे। किन्तु आगे चलकर पश्चिम के कई देशों में नए–नए आविष्कार किए गए। वहाँ के लोग परिश्रम और अभ्यास के बल पर अपने देश में औद्योगिक क्रान्ति ले आए और विकास करते गए।

चित्र 4.3

प्रगति के पथ पर अग्रसर उन्हीं देशों की ओर इशारा करते हुए कवि कहता है कि वे लोग आगे बढ़ रहे हैं और हम शासकों के दमन से भयभीत, हताश और निराश होकर भाग्य के भरोसे बैठे हैं। बदलते हुए समय के अनुसार अपने को बदलने के लिए परिश्रम नहीं करते और अपनी हर असफलता के लिए भाग्य को दोषी मानते हैं। एक कहावत में कही गई बात बिलकुल सत्य है– 'दैव–दैव आलसी पुकारा' अर्थात् आलसी लोग कर्म नहीं करते और विपत्ति आने पर केवल भाग्य को दोष देते हैं। ऐसे लोग नहीं जानते कि कर्म–रूपी तेल के बिना कभी भी भाग्य–रूपी दीपक नहीं जल सकता। अर्थात् जिस तरह दीपक को जलाने के लिए तेल का होना आवश्यक है, उसी प्रकार किसी भी कार्य में सफलता पाने के लिए निरंतर कर्म और परिश्रम करना आवश्यक है। इसी बात को कवि एक दूसरे उदाहरण से समझाते हुए कहता है कि मूर्ति ढालने या बनाने से पहले उसका साँचा या फर्मा बनाना आवश्यक होता है और यह साँचा मनुष्य अपने परिश्रम से बनाता है। भगवान भी उन्हीं की सहायता करते हैं जो परिश्रम करना जानते हैं। उर्दू और अंग्रेज़ी भाषाओं में प्रचलित इन कहावतों को पढ़िए

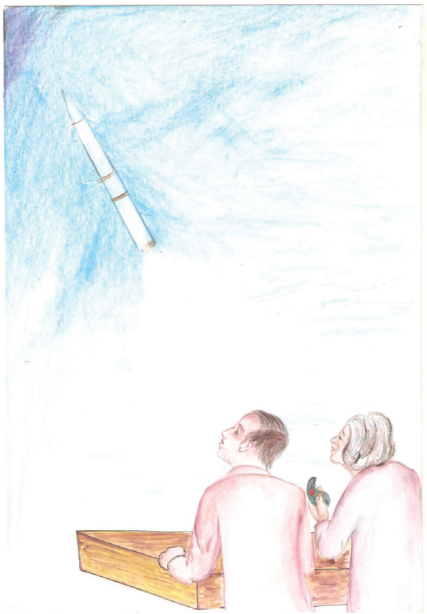

चित्र 4.4

उर्दू– हिम्मते मर्दां मददे खुदा। अर्थात्– मनुष्य हिम्मत करे तभी भगवान मदद करता है।

यही कहावत अंग्रेजी में इस प्रकार है– God helps those who help themselves.

ऊपर के उदाहरण से स्पष्ट है कि मेहनती लोग ही अपनी मेहनत या अभ्यास से ईश्वर की कृपा का प्रसाद पाकर जीवन में सफलता प्राप्त करते हैं। अतः हमें आलस छोड़कर मेहनत करनी चाहिए, तभी कठिनाइयों पर विजय पाई जा सकती है।

टिप्पणी: यहाँ आपने देखा कि कवि ने परिश्रम या कर्म के महत्त्व को दीपक और तेल के माध्यम से समझाया है। इस तरह के वर्णन से इन पंक्तियों में रूपक अलंकार है। आइए रूपक अलंकार के बारे में जानें–

रूपक अलंकार

परिभाषा- उपमेय पर जब उपमान का आरोप कर दिया जाए तो रूपक अलंकार होता है। इस स्थिति में उपमान और उपमेय एकरूप हो जाते हैं। जैसे– मुखरूपी चंद्रमा।

पाठ में पंक्ति है–

'पर कर्म–तैल बिना कभी विधि-दीप जल सकता नहीं'

आइए, पहले परिभाषा में प्रयुक्त उपमेय, उपमान तथा 'एकरूप वर्णन' शब्दों का मतलब समझें।

उपमेय- कविता की पंक्ति में जिस वस्तु का वर्णन हो, उसे 'उपमेय' कहते हैं। इस उदाहरण में 'कर्म' तथा 'विधि' उपमेय है।

उपमान- जिस वस्तु से उपमेय की तुलना की जाती है। जैसे 'मुख चंद्रमा के समान है' में चंद्रमा उपमान है। कविता की पंक्ति में 'तैल' और 'दीप' उपमान हैं।

एकरूप वर्णन– उपमा अलंकार में उपमेय और उपमान की तुलना की जाती है। पर रूपक अलंकार में उपमेय और उपमान का वर्णन इस तरह मिला कर किया जाता है कि दोनों में कोई भेद नहीं रहता। इस तरह के एकरूप वर्णन को 'उपमेय पर उपमान का आरोप' कहते हैं और जहाँ उपमेय पर उपमान का एकरूप आरोप हो, वहाँ रूपक अलंकार होता है।

पाठगत प्रश्न-4.2

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. जो लोग कभी पीछे थे वे कैसे आगे बढ़ गए?

   (क) भाग्य के सहारे ☐ (ख) ईश्वर की कृपा से ☐

   (ग) साँचे में ढलकर ☐ (घ) कठिन परिश्रम करके ☐